Rs 8/-

श्रमिकों के मसीहा भगवान विश्वकर्मा जी

विश्वकर्मा जीवन दर्शन

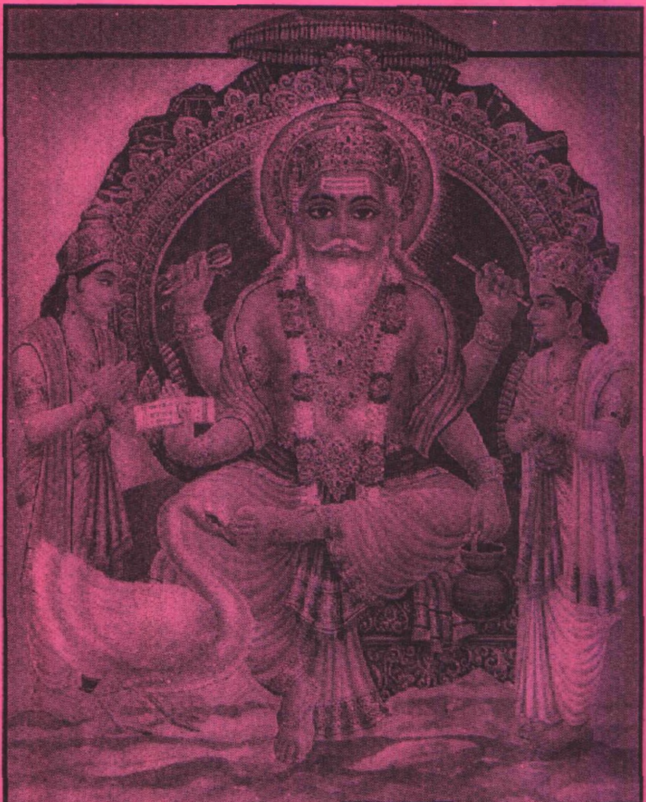

विश्वकर्मा जयन्ती 17-09-2004

(कन्या सक्रांति)

प्रेषक :

उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन

सम्बन्धित भा॰ रे॰ म॰ संघ एवं भा॰ म॰ संघ

2426, तिलक गली, चूना मण्डी, पहाड़गंज, नई दिल्ली।

आरती श्री विश्वकर्मा भगवान की

जय विश्वरूप हरे प्रभु जय विश्वरूप हरे ।
शरनागत के स्वामी पूरन काज करे । ॐ ।
तुम हो विश्व विधाता तुम विष्णु स्वामी ।
शंकर आप स्वयं शम्भू तुम त्वष्टा नामी । ॐ ।
तुम आदित्य अगोचर तुम हो अविनाशी ।
हिरणा गर्व सुख रासी तुम मंगल रासी । ॐ ।
देवन देव महात्म बहु विधि श्रुति गावे ।
ध्यान धरे निसिवासर तब जन सुख पावे । ॐ ।
भाल विशाल त्रिपुण्ड मस्तक मुकट धरे ।
लख बिराटरूप तुम्हारा मम मन मोद धरे । ॐ ।
विनय करू कर जोर मम दुख हर लीजे ।
ज्योति ज्ञान जगाओ उल उज्जवल कीजे । ॐ ।
शान्ति सुधा बर्षाओ ओ कलेश हरो मनका ।
तन मन धन से सेवक मैं तेरे चरनन का । ॐ ।
तुम पितु मात सहाई मैं दासन दासा ।
भक्त-भाव से पूरण कर दो मन मम अभिलाषा । ॐ ।
ॐ जय विश्वरूप हरे प्रभु जय विश्वरूप हरे ।
शरनागत के स्वामी पूरन काज करे । ॐ ।

✡ ✡ ✡

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

श्लोक

विश्वकर्म भव पूर्णम शिष्ठी आदम विदा सुते।

रचत्यं खिल देवना ब्रह्मा विष्णु महेश्वरः।

श्री श्री 107 श्री ॐकार विराट विश्व पति भगवान के पंच मुख से पाँच ऋषि प्रगट हुये।

मनु त्वष्टा देवग मय शिल्पी,

दायज-लोहकार, ताम्यकार, सोनकार, बायज-काष्टकर, शिल्पकार,

प्रथम मनु ऋषि से उत्पन्न-शिल्पयान सुधोवन जी भये, इनसे इनके पुत्र धर्मदेवजी, धर्मदेव के पुश प्रभास भये, प्रभास के पुत्र त्वष्टा नन्द जी भये, त्वष्टा नन्द जी के पुत्र श्री श्री 107 श्री विश्वरूप भगवान का जन्म हुआ। इनका जन्म माघ शुक्ल 13 को पुख्य नक्षत्र में हुआ। 22 वे मानत्री 27वें अंश में भगवान विश्वरूप पूर्व शतयुग में प्रगट हुये और इनका वंश भारी विस्तार में चला आया है। ये पाँचाल ब्राह्मण जगत गुरु कहाये।

✡ ✡ ✡

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

आदिशिल्पी भगवान विश्वकर्मा

भारतीय समाज में श्रम का कितना मान सम्मान था इसका प्रमाण इस से मिलता है कि आदिशिल्पि विश्वकर्मा को 'भगवान' के रूप में माना गया। समाज की प्रगति, श्रम और श्रमिकों पर निर्भर करती है।

विश्वकर्मा, यह केवल एक व्यक्ति का बोद्धवाचक शब्द नहीं बल्कि एक रचनात्मक, स्वस्थ और समाज हितैषी परंपरा का नाम है।

देवगुरु वृहस्पति एवं माता वरस्त्री की ज्येष्ठ संतान थे विश्वकर्मा। इनकी माता ने उच्चकोटि की योगसाधना की थी और सारे विश्व का भ्रमण किया था। विश्वकर्मा ने अपने माता-पिता से कुशाग्र बुद्धिमता, मूलग्राही प्रज्ञा एवं त्यागमय जीवन के संस्कार पाये थे। भगवान विष्णु के परमभक्त प्रहलाद की पुत्री रचना से उनका विवाह हुआ। उनकी संतानों में विश्वरूप(त्रिशिरा) वृत्र(वृत्रसुर) और नल बहुत ही कुशाग्रबुद्धि व बलशाली थे। एक अपमान के कारण वृहस्पति इन्द्र को त्यागकर चले गये। इन्द्र की शत्रु कन्या का पुत्र होते हुए भी विश्वरूप को गुरुपद पर विराजमान किया गया। इन्द्र विश्वरूप की बढ़ती लोकप्रियता को न देख सका व उसका वध कर दिया। बदले की भावना से विश्वकर्मा ने बलशाली पुत्र की प्राप्ति हेतू घोर तप किया। जिससे वृत्र नामक अत्यंत बलशाली

पुत्र प्राप्त हुआ। उसके आतंक से भूमण्डल व देव मण्डल असुरक्षा की भावना से भयभीत रहने लगे। तब देवताओं ने बृहस्पति की उपस्थिति में इस समस्या के निदान पर चर्चा की। बृहस्पति ने उपाय सुझाया कि घोरतपस्वी दधीची ऋषि की अस्तियों का वज्र बने उससे ही इस का वध हो सकता है। ऐसा वज्र केवल विश्वकर्मा ही बना सकते हैं। सभी देवता एकत्र होकर दधीची ऋषि व वृत्रासुर के पिता विश्वकर्मा के पास गए। उन्हें राष्ट्र हित में समर्पित होने का आह्वान किया। एक और पुत्र प्रेम जिसे घोर तपस्या कर प्राप्त किया था, दूसरी ओर राष्ट्र हित। विश्वकर्मा जी में विवेक और कर्तव्यनिष्ठा जागृत थी। अतः दधीची ऋषि ने राष्ट्रहित में अस्थि दान किए और विश्वकर्मा न उन अस्थियों से घातक वज्र बनाकर इन्द्र को सौंपा। इन्द्र ने उस वज्र से वृत्रासुर का वध कर संसार को आतंक से मुक्त किया। आह! कैसा असीम त्याग था राष्ट्रहित में महर्षि दधीची व विश्वकर्मा का। तीसरी संतान नल ने रावण वध हेतू भगवान श्री राम के लिए समुद्र पर पुल का निर्माण किया था।

विश्वकर्मा वैदिक देवताओं में से एक हैं। स्वयंभूव मनवन्तर में देवताओं और प्रजापति के शिल्पी थे। वे शिल्प विज्ञान के आचार्य थे।

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

प्राचीन काल में भारत दुनिया का सर्वाधिक वैभव सम्पन्न देश था। भारत का आर्थिक और औद्योगिक विकास कुटीर उद्योगों के माध्यम से हुआ था। विश्वकर्मा वशं परंपरा से अभ्यस्त होने के कारण अतिकुशल कारीगर थे। स्वरोजगार की जनमानस में प्रतिष्ठा थी। यह परंपरा विश्वकर्मा से प्रारंभ हुई। श्रमिक स्वयं अपना मालिक था और मालिक स्वयं श्रमिक। दोनों समाज के अंग थे। दोनों पूरी लगन से सामाजिक कर्तव्य की भावना से अपना काम करते थे। श्रम की प्रतिष्ठा का संवर्धन करनेवाली इस से बढ़ कर अन्य कोई व्यवस्था हो नहीं सकती। इस परंपरा के जनक को श्रमिक वर्ग आज कच्छ से कामरूप व कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत वर्ष के सभी प्रदेशों में व्याप्त है। खेतिहार, सुनार, लोहार, बढ़ई आदि सारे श्रमिक स्वयं को विश्वकर्मा के वंशज मानते हैं। भगवान विश्वकर्मा श्रेष्ठतम गुणों के आदर्श प्रतीक हैं। तपस्या और समर्पण उनके जीवन का प्रमुख अंग रहा है। जिसके कारण आज का समाज अपने आप को उनकी संताने मानकर गौरव का अनुभव करता है। उन्होंने अपनी तपस्या से और अविराम अनुसंधान कार्य से सभी प्रकार के शस्त्र शास्त्र कला और विधाओं के अविष्कार से इस देश को सम्पन्न बनाया।

भगवान विश्वकर्मा ने सौर ऊर्जा की उपयोगिता को समझ लिया था। इसका उपयोग एवं नियंत्रण करने का ज्ञान

उन्हें था। सौर ऊर्जा का उपयोग करते हुए उन्होंने विष्णु के लिए सुदर्शन चक्र, शिव के लिए त्रिशुल व त्रिपुरासुर के विनाश हेतू इन्द्र के लिए विजय नामक रथ का निर्माण किया। जिसे आज हम प्रक्षेपणास्त्र या अवकाशयान (Space Craft) कहते हैं। देवों के लिए वायुयान, इन्द्र के लिए इन्द्रलोक और सूतल नामक पाताल, भगवान कृष्ण के लिए द्वारिका और वृन्दावन, धर्मराज युधिष्ठिर के लिए इन्द्रप्रस्त और इन्द्र के लिए लंका का निर्माण किया। उन्होंने इंजीनियरिंग की सर्वप्रथम आधिकारिक पुस्तक लिखी विश्वकर्मा ही थे पृथ्वी और स्वर्ग के निर्माता। भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित कृतियों की यह विशेषता थी कि यह रचना की दृष्टि से सुन्दर सुरक्षा की दृष्टि से अभेद्य और अर्न्तगत सुविधाओं से परिपूर्ण थी।

भगवान विश्वकर्मा की प्रतिभा का चहुँमुखी गुणगान था। उनका नवनिर्माण कार्य ओर संशोधन केवल वास्तुकला या शिल्पशास्त्र के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था। अन्य अनेक शास्त्रों के सृजन और विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसिद्ध पुष्पक विमान उन्हीं ने बनाया था। यह विमान भूतल, जल और आकाशमार्ग में भी भ्रमण कर सकता था। वे ललित कलाओं के भी मर्मज्ञ ज्ञाता हैं। संगीतकला, नृत्य, चित्रकला, वास्तुशिल्पकला आदि कलाओं से युक्त सांस्कृतिक वैभव के एक मात्र स्त्रोत श्री विश्वकर्मा हैं।

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

वास्तविक लक्ष्य की ओर चलते, लक्ष्य के अनुकूल पथ-प्रदर्शक बन सके ऐसी प्रतिमाएं समाज के सम्मुख प्रस्तुत करनी होती हैं। वैसे ही वे जीवन चरित्र जिनको हम आदर्श मानकर अनुसरण करें? जिनका कार्य समाज के हित में हो। उनके व्यवहार में करनी और कथनी में अंतर न हो, जो अपने मार्ग से कभी पथभ्रष्ट न हुए हों, जिनके चरित्र में सार्वकालिक दिशा दर्शन की क्षमता हो, जो अपने कार्य में यशस्वी हुए हों और जिनके जीवन चरित्र के अनुसरण से अखण्ड प्रेरणा का सृजन हो सके वे ही चरित्र वास्तविक पूजा पात्र हो सकते हैं।

✡ ✡ ✡

भारत तपोभूमि रहा है तथा इस भूमि पर समय-2 पर अनेक अवतारों त्रोदपियो महात्माओं ने अवतरण किया तथा इस धरातल पर भगवान स्वयं विराजमान रहे। विश्वकर्मा की महिमा अति आदरणीय है जिसने न केवल भारत बल्कि पूर्ण विश्व के मानव जाती के कल्याण हेतू अध्यातम के द्वारा गुरु दीक्षा दी, तथा भारत विश्वगुरु कहलाया। उसी मान सम्मान की पुनः प्राप्ति हेतू आज हमें संघर्ष करना पड रहा है, ऐसा क्यों? क्योंकि हम अपने पूर्वजों द्वारा दिखलाये गये रास्ते से विचलित हो गये और इस कारण आज चारों तरफ अशान्ति, कुशीलता, अनाचार, भय, संशय, असहयोग व असुरक्षा का वातावरण है।

लेकिन राष्ट्र निर्माण की श्रृंखला में भारतीय मजदूर संघ ने अपनी सांस्कृतिक और शास्त्रों में लिखी गई देवताओं की महत्ता को कोई आँच न आये का दृढ़ संकल्प लिया हुआ है तथा श्रमिकों के मसीहा भगवान विश्वकर्मा के जयन्ती जोकि प्रत्येक वर्ष 17-09 को होती है। इसी को भारतीय श्रम दिवस के रूप में माना है और भारत सरकार से विश्वकर्मा जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश हेतू आग्रह किया है। आप सब की शक्ति से यह संगठन इस माँग को पूर्ण करने में सफल होगा। लेकिन वर्तमान में यदि आज श्रमिकों की अवस्था पर विचार किया जाये तो यह हास्यस्पद लगता है कि हम भारतीय श्रमिकों पर भी पाश्चात्य का रंग चढ़ने लगा है क्योंकि आज भी कुछ कामगार विदेशियों की नकल कर विश्वकर्मा जयन्ती भारतीय श्रम दिवस के रूप में न मना कर मई दिवस को श्रम दिवस मनाकर भारतीय संस्कृति से खिलवाड कर रहे हैं। इसमें श्रमिकों का कम और उन का नेतृत्व कर रही राष्ट्रीय स्तर की वामपन्थी यूनियन का नेतृत्व जिम्मेवार है। जिस राष्ट्र ने आत्मबलिदान और संघर्ष के पश्चात स्वाधीनता प्राप्त की उसी राष्ट्र में आज विदेशी ताकतों के तौर तरीकों को हमारे समाज राष्ट्र व श्रमिकों को अपने चंगुल में फँसाने के षडयन्त्र को राष्ट्र भक्ति से ओत-प्रोत

भारतीय रेलवे मजदूर संघ व उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन साकार नहीं होने देगी। तथा श्रमिकों के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयासरत रहेगी।

यद्यपि भगवान विश्वकर्मा का इतिहास आदिकाल से जुड़ा है तथापि उनके निमित विश्वकर्मा पुराण से सारगर्भित तथ्यों को इस छोटी सी पुस्तिका में संकलित करने का प्रयास किया गया है। जोकि विश्वकर्मा जी के जीवन दर्शन का कार्य करेगी। इस संकलन में लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल, देहरादून (सहायक महामंत्री, भा०रे०म०संघ), सुखदेव मिश्रा, भा०म०संघ, कानपुर तथा डी.एम.राव देव, (अध्यक्ष भा०रे०म०संघ) पूर्ण योगदान दिया है। उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन सदैव इनकी आभारी रहेगी।

पुस्तक के संकलन में प्रथम प्रयास होने के कारण यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन को इस संस्करण में अवश्य अवगत करायें ताकि *अगले संस्करण* में उसे संशोधित किया जा सके।

उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन भगवान विश्वकर्मा निमित प्रार्थना करती है कि वह श्रमिकों को सदबुद्धि व निस्वार्थ सेवा करने के लिए अपना आर्शीवाद दें।

उत्तर रेलवे *कर्मचारी* यूनियन

✡ ✡ ✡

आह्वान

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य हो जाता है कि ऐसे महाप्राण के जन्मदिवस को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में प्रचलित करें। समय आ गया है कि मजदूर क्षेत्र में भी राष्ट्रीय अस्मिताओं को हम जगायें। श्रमिकों को दर–दर की ठोकरें खाने, किसी के सामने हाथ पसारने तथा किन्हीं भी उलट सुलट नारों के पीछे भागने की दु:स्थिति की हम बदलने का संकल्प करें। हम सभी कार्यक्षेत्रों के सदृश्य श्रमिक क्षेत्र में अपनी राष्ट्रीय परंपराओं का आदर करें। यह अत्यन्त आश्चर्य एवं लज्जा की बात है कि जब लाखों भारतीय श्रमिक आज भी श्रद्धापूर्वक इस दिवस को मनाते हैं तो भी आंग्ल शिक्षा–दीक्षा प्राप्त आधुनिक ट्रेड यूनियनों के नेता इसके महत्त्व को समझने से इन्कार करते हैं। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या हम एक नवजात राष्ट्र हैं? क्या भारत में श्रमिक नहीं थे? क्या अपनी अनोखी स्थिहति के अनुकूल परंपराओं और संस्थाओं को विकसित करने के लिये हमारे पास प्रयान्त बुद्धि का अभाव था? क्या भारतीय प्रतिभा के लिए श्रम दिवस का विचार सर्वथा अकल्पनीय था? क्या पश्चिम के मई दिवस के महत्त्व एवं उसके लागू करने का विचार किया था? अनेक औद्योगिक बुराईयों से ग्रस्त पाश्चत्य लोगों से भव्य अतीत रखने वाले इस राष्ट्र को श्रम दिवस का उधार माँगने की अनुमति नहीं दी जा सकती। अपने कतिपय नेताओं के आत्मविस्मरण के कारण हमें कई पाश्चात्य रीति–रिवाजों को मानना पड़ा है और यह मई दिवस भी उसमें से एक है।

पश्चिम के कुछ सत्य

मई दिवस *श्रमिक फूट का दिन*

मई दिवस *देशभक्ति के लिए चुनौती*

मई दिवस *का अर्थ वर्ग संघर्ष*

मई दिवस *क्यों नहीं, अगले अंक में।*

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

श्री विश्वकर्मा पुराण माहात्म्य

जयतु जयतु देवो विश्ववृद्ध विश्वकर्मा भवः ।
तव प्रतिरोमे लक्षविश्वानि सन्ति ।।
सकल जगत शास्ता निर्गुणो वा गुणोवा ।
प्रभवतु मच देव सौख्य संपत्प्रयाता ।।

समस्त विश्व को धारण करने वाले तथा सकल विश्व के कर्ता ऐसे देवाधिदेव प्रभु विश्वकर्मा की जय हो। जय हो। जय हो। आपके प्रत्येक रोम में लाखों विश्वों का निवास से समस्त जगत का शासन करने वाले ऐसे निर्गुण अथवा सगुण ऐसे वह देवाधिदेव मुझे सब प्रकार के सुख सम्पत्तियों के देने वाले हो। सूतजी बोले–हे ऋषियों! आदि सृष्टि के आरम्भ के बाद प्रमि काल के अन्त में जब समस्त पृथ्वी पर प्रलय होने को था। उस प्रलय काल के भयंकर तूफान से तथा भूकम्पाति के कारण से अत्यन्त डोलती पृथ्वी के लिये जिनको भय उत्पन्न हुआ वह ऐसे आदि ऋषि मुनियों के ऊपर की गाथाओं का गायन किया हुआ है। ऋषि बोले–हे सूतजी! तपस्या के प्रभाव के कारण से सब प्रकार की सम्पत्तियाँ जिनके चरणों में दासी की तरह नित्य स्मरण करती हैं। फिर भी तप को ही सब प्रकार के धनों में जिन्होंने मुख्य गिना है। ऐसे साक्षात तपरूपी इन ऋषि मुनियों ने विश्वकर्मा की कौन से कारण से प्रार्थना की और भी उनके अतः तुच्छ गिने हुये ऐसी सुख सम्पत्तियों के लिये जो प्रार्थना की इस तरह आपने कहा वह बात हमको विपरीत दीखती है। अतः तुच्छ और नाशवन्त ऐसी इन सम्पत्तियों को तो ऋष्झि क्षुद्र मानकर उसका तिरस्कार करते हैं तथा दूर से ही उसका त्याग करते थे। फिर भी तपस्या छोड़कर प्रभु की इस प्रकार प्रार्थना करने का कारण क्या था। आगे सब बात हमसे तुम कहने के योग्य हो। ऋषियों के इस प्रकार के वचन सुनकर सूतजी बोले–

हे ऋंषियो! इस विश्व में सब पदार्थ गतिमान हैं। इसमें आपने जिसके

ऊपर निवास किया है। ऐसी ये पृथ्वी अपनी गति से अपने मध्य बिन्दु के आस-पास परिक्रमा करती रहती है और उसके कारण से दिन और रात होते हैं। इस रात्रि को नित्य प्रलय कहा जाता है। इस प्रकार से अपनी तीन सौ साठ दिन और रात्रि मिलकर एक वर्ष होता है जब अपने तीन सौ साठ वर्ष हों तब देवताओं का मात्र एक ही वर्ष गिनने में आता है। देवताओं का इस प्रकार से बारह हजार, चौबीस हजार, छत्तीस हजार, अड़तालीस हजार वर्ष के प्रमाण से सतयुग आदि से चार युगों की कल्पना की गयी है। इन सभी वर्षों का जो एक लाख बीस हजार वर्ष का मानने में आता है और उतने ही समय में अपने चार करोड बत्तीस लाख वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। इन चार युगों को महायुग अथवा चौकड़ी कहा जाता है। दूसरे महायुग की शुरूआत होय उसके बीच में चार हजार देवताओं के वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। इस बीच के समय को नैमित्तिक प्रलय कहा जाता है और उस समय में ये सारी पृथ्वी जल में समा जाती है तथा पृथ्वी के ऊपर के तमाम जीव, प्राणी, मनुष्य, वृक्ष, औषधि आदि का विनाश होता है। हे ऋषियो! आद्र सृष्टि के शुरूआत के बाद जब प्रथम नैमित्रिक प्रलय होने वाली थी उस समय समस्त पृथ्वी पर हाहाकार हो गया भयंकर घड़-घड़ाहट के साथ में प्रलयकाल के उड़न्वासों पवन एक ही साथ में वनटोरिया का रूप धारण करके रहने लगे दिशाओं में धूल को ढेरियों से आकाश में भयंकर अन्धकार छा गया तथा वृक्ष मकान एवं पर्वत टूटने और उड़ने लगे तथा समुद्र में ज्वार भाटाओं के कारण बड़ी-बड़ी लहरें उछलने लगी एकाएक आये हुए इस भयंकर आंधी के समान पवन के तूफान से सब प्रजायें दुखी हो गयी तथा कुछ भी समझ में न आने से इधर से उधर दौड़ा-दौड़ करने लगी एवं भयंकर चिचकारियों के साथ दर्द भरी हुई आवाजों से रक्षा की पुकार करती हुई वह सब प्रजा चारों दिशाओं में दौड़ने लगी प्रजाओं के इस प्रकार के अति नादों को सुनकर समाधि में स्थित ऋषि मुनियों की समाधि छूट गयी अपने-2 आसन के ऊपर से उठकर स्वस्थ हुए उन ऋषियों ने जब प्रलयकाल के समान पवन का ये तूफान देखा

तब उनको भी प्रजा के रक्षण का कोई भी मार्ग न दिखा और इसलिये प्रजाजनों के रक्षण का मार्ग जानने के लिए वह बद्रिकाश्रम की ओर चले बद्रिकाश्रम में आद्र ऋषि नारायण सृष्टि के कल्याण के लिये दस लाख वर्ष तक चलने वाला ऐसा उग्र तप कर रहे थे। सब ऋषि तूफान में लड़खड़ाते हुए तथा एक दूसरे से टकराते हुए इस तरह भयंकर अन्धकार में से मार्ग ढूँढ़ते हुए बद्रिकाश्रम की ओर आ रहे थे।

मार्ग में ही उनका नारद महर्षि से मिलाप हुआ परस्पर कुशलता के समाचार पूछते हुए सब ऋषियों ने नारद जी से सृष्टि के ऊपर आये हुये महान भय का निवेदन किया और उन्होंने नारदजी से कहा कि वह भी उपाय ढूँढ़ने के लिए बद्रिकाश्रम जा रहे हैं तथा भगवान नारायण के समाचार पूछे। ऋषियों के इस प्रकार वचन सुनकर के महर्षि नारद बोले–हे ऋषियों! इस समय तो प्रलयकाल की हवा से गतिमान हुये समद्र का जब बद्रिकाश्रम के चारों ओर योजनों तक की भूमि को अपने समाया हुआ आगे बढ़ रहा है केवल नर नारायण प्रभु की तपस्या के प्रभाव से वह जल आश्रम को किसी प्रकार की क्षति नहीं कर सकता परन्तु हजारों योजन के विस्तार में फैले हुए इस प्रलयकाल में आगे–आगे बढ़ते जल के अत्यन्त वेग वाले प्रभाव के विरुद्ध में तुम बद्रिकाश्रम नहीं जा सकते परन्तु सबके ह्रदय में निवास करने वले प्रभु की आज्ञा से मैं तुम्हारे पास आया हूँ। बद्रिकाश्रम में तपस्या कर रहे समस्त विश्व के नाय श्री नारायण ने इस भयंकर प्रलयकाल से समस्त पृथ्वी को गोदी में रखने की इच्छा वाले ऐसे इस अति वेग वाले जल के द्वारा तुम्हारा तथा प्रजा का रक्षण करने का मार्ग बताने के लिये ही अपनी समाधि छोड़कर मुझे तुम्हारे पास भेजा है तथा प्रलयकाल का जल आश्रम को छोड़े उससे पहले मुझे वहाँ से विदा करके आदि नारायण स्वयं तुरन्त ही समाधि में लीन हो गये हैं और जैसे ही मैं आश्रम के बाहर निकला कि तुरन्त ही समुद्र का अगाध जल आश्रम के चारों ओर फिर गया। नारायण भगवान ने मुझे जिस प्रकार आज्ञा की है वह तुम सुनो पास में ही प्रलयकाल को जानकर जब

बद्रिकाश्रम में रहे हुए उन नारायण प्रभु की मैंने स्तुति की तब उन्होंने अपनी समाधि क्षण भर के लिये छोड़ी और मुझसे बोल–हे वत्स! प्रलयकाल के बादल चारों तरफ मड़रा चुके हैं। थोड़ सी देर में प्रलय का पवन शुरू होगा तथा समुद्र के जल बड़े पर्वतों की ऊँचाई से उछालते हुये मोर के रूप में बदलकर वह पवन उसको पृथ्वी की तरफ घसीट लायेगा और पवन के द्वारा ही समुद्र का अगाध जल सारी पृथ्वी को गोदी देकर इस प्रलय के भय से व्याकुल हुई प्रजा इस भयंकर चीत्कार के साथ में रक्षा के लिये पुकार करती हुई चारों दिशाओं में दौड़ रही है और उस प्रजा के रक्षा का उपाय खोजने के लिये ऋषि लोग इस तरफ आ रहे हैं। हे नारद! तुम यहाँ से शीघ्रता से उत्तर दिशा की ओर जाओ और यहाँ आ रहे उन ऋषियों को रास्ते में ही रोक दो तथा उनको मेरी आज्ञा से इलाचल के ऊपर रवाना कर दो प्रभु विश्वकर्मा ही उनका रक्षण करने वाले हैं। इतना कहकर प्रभु तुरन्त ही फिर समाधि धारण करके बैठ गये। नारदजी के ऐसे वचन सुनकर ऋषि बोले–हे ब्रह्मपुत्र महर्षि नारद! तुम परम कृपालु की क्या आज्ञा है? वह आप बताओ तथा इस संसार के प्राणियों के रक्षण के लिये अब हमको क्या करना है उसका आप हमको मार्ग दर्शन कराओ तु निरंतर प्रभु का स्मरण करने वाले होकर प्रभु के निकट में ही रहने वाले और उससे ही हमारे मन में तुम प्रभु तुल्य ही हो फिर भी इस समय तो प्रभु ने तुमको हमारे पास भेजा है। इसलिए अब हमको क्या करना वह आप कहो। ऋषियों के ऐसे वचन सुनकर नारदजी बोले–हे ऋषियो! अब सब प्रजा को साथ में लेकर यहाँ से इलाचल की ओर प्रस्थान करना चाहिये। प्रलयकाल के पवन से प्रणित समुद्र का जल देखते–2 सारी पृथ्वी को अपने में समा लेगा और उस समय पृथ्वी के ऊपर कोई भी जीव, मनुष्य, वृक्ष या औषधि उस प्रलयकाल के जल के द्वारा विनाश में से न उबर सकेगी। नारायण यह तपस्या कर रहें हैं उस बद्रिकाश्रम की भूमि तथा विराट प्रभु श्री विश्वकर्मा की चरण रज जहाँ पड़ी हुई हो उस इलाचल पर्वत के सिवाय सारी पृथ्वी जल में समा जायेगी। उस इलाचल के ऊपर अपनी सब

प्रकार से रक्षा हो सकेगी। इस समय इलाचल के ऊपर प्रभु के स्थान की रक्षा करने के लिये शेषनारायण अपने एक अंश से ब्राह्मण का स्वरूप धारण करके रह रहे हैं। वह वात्सायन को इस बखत विराट प्रभु श्री विश्वकर्मा की लीलाओं का वर्णन रूप महापुराण सुन रहे हैं। हम सब प्राणियों के साथ वहाँ जाकर भगवान विश्वकर्मा की लीलाओं का श्रवण करते हुए अति दुस्तर ऐसे इस प्रलयकाल को व्यतीत हुआ जानेंगे। नारदजी के इस प्रकार के वचनों से जिन्होंने धर्म को धारण किया है उन सब ऋषियों ने इसके बाद तमाम वनस्पति तथा औषधियों के बीज लेकर तथा प्रलयकाल के जल से बची हुई सब प्रजा को साथ में लेकर इलाचल की ओर चल दिये तथा अपने पीछे आ रहे प्रलयकाल के जल के वेग को न गिनते हुए नारदजी के साथ में जाने लगे। इस तरह अति वेग से आ रहे जल से घबड़ाये हुये उन सबको देखकर जब वह जल उनके बिल्कुल नजदीक आ पहुँचा उस समय नारदजी ने उन सबको अपने हृदय के ऊपर बैठाकर अपनी भक्ति के प्रभाव के द्वारा उन सबको क्षण भर में ही इलाचल के ऊपर पहुँचा दिया। इस प्रकार से महर्षि नारदजी की कृपा से इलाचल को प्राप्त हुई सब प्रजा सहित उन ऋषियों ने विश्वकुण्ड में स्नान किया तथा अपने कर्मों से निर्मित हुये उन ऋषियों ने मन से ही श्री विश्वकर्मा का ध्यान करके समस्त संसार की रक्षा कि लिये तथा प्रलयकाल के जल से प्रजा को उबारने के लिये और उबरी हुई प्रजा को फिर से सुख सम्पति प्राप्त करने के अर्थ से मैंने तुमसे जो पहले कहा उस प्रकार से प्रभु श्री विश्वकर्मा की स्तुति करके ऋषि बोले–

सकल विश्व को धारण करने वाले तथा सकल विश्व के कर्ता ऐसे देवाधिदेव प्रभु विश्वकर्मा की जय हो। जय हो। आपके प्रत्येक रोम में लाखों विश्वों का निवास है। समस्त जगत का शासन करने वाले ऐसे निर्गुण अथवा सगुण जैसे होय ऐसे वह देवाधिदेव मुझे सब प्रकार की सुख सम्पत्ति के देने वाले हों। सूतजी बोल– हे शौनक! इस प्रकार से प्रभु श्रीविराट विश्वकर्मा की सकल विश्व के सुख सम्पत्ति के लिये प्रार्थना करके वह सब ऋषि इलाचल

के पास आये हुए प्रभु विश्वकर्मा के अत्यन्त प्रिय ऐसे चम्पक वन में गये यहाँ चम्पक वन में शेषनारायण अपनी एकमात्र कला से ब्राह्मण स्वरूप धारण करके अपनी पुत्री इला तथा उसके पति इलाचल जोकि भगवान को अधिक प्रिय थे उनका रक्षण करने के लिये विराजे हुए थे तथा उनके सामने एक आसन के ऊपर भगवान की लीलाओं का श्रवण करने को उत्सुक ऐसे वात्सायन विराजे हुए थे। सारी प्रजा तथा ऋषियों के साथ में आ रहे महर्षि नारद को देखते ही वात्सायन के सहित शेष्ज्ञनारायण अपने आसन के ऊपर खड़े हुए नारदजी के सामने जाकर उन्होंने उन सबका स्वागत किया इसके बाद सबको योग्य आसन आदि देकर सम्मान किया है। ऐसी उन ऋषियों सहित प्रजा के मन को शान्ति देने के हेतू से सारे विश्व के कर्ता धर्ता और हर्ता ऐसे पुराण पुरुष विश्वकर्मा की लीलाओं का सबको श्रवण कराने के लिये शेषनारायण की अनेक लीलाओं का जिसमें वर्णन है। ऐसा धर्म भक्ति से युक्त पुराण में प्रभु विश्वकर्मा ने अपने स्वरूप का दर्शन कराया है। वट वृक्ष के नीचे दिव्य देह को धारण करने वाले ऐसे उन प्रभु के दर्शन होने से सब कोई अपने को धन्य मानने लगे तथा नतमस्तक होकर दोनो हाथ जोड़कर सब प्रजा सहित ऐसे नारद आदि सब ऋषियों ने वेद में कहे हुए मंत्रों से प्रभु की उत्तम प्रकार से स्तुति की उनकी स्तुति से प्रसन्न हुए प्रभु ने सब प्रजा के कल्याण के लिये फिर से पृथ्वी को जल से बाहर स्थापन करके उसको स्थिर करके तथा सब प्रजाओं को सुख तथा सम्पत्ति देकर इस तरह कृपालु विश्वकर्मा प्रभु की कृपा को पाकर प्रजा के लोग आज भी गाते हैं।

हे मनुष्यो! वास्तव में सारे विश्व की रचना करने वाले प्रभु श्री विश्वकर्मा का ही तुम भजन करो। उत्तम वरदानों के देने वाले तथा मनवांछित फल देने वाले तथा सुख शांति को प्रदान करने वाले प्रभु विश्वकर्मा का ही तुम भजन करो।

इति श्री सूत–शौनक संवाद रूप श्री विश्वकर्मा पुराण का माहात्म्य सम्पूर्ण

।। श्री विश्वकर्मा देव की जय हो ।।

जिये देश हित, मरें देश हित

"इस दफ्तर के आधे लोगों को रणक्षेत्र में जाना होगा। पर इसके साथ ही काम में रूकावट आई तो सुरक्षा विभाग को बड़ा नुक्सान होगा।" चिन्तायुक्त अन्तःकरण से कार्यालय अधीक्षक बोला। दूसरे ही क्षण एक कर्मचारी ने उत्तर दिया, "आप चिन्ता क्यों करते हैं। अभी तो हम केवल 8 घण्टे ही काम करते हैं। आधे लोगों को आप भेज दीजिये। शेष लोग 16 घण्टे काम करके कार्य पूरा करेंगे।" दूसरे दिन आधे लोग युद्ध क्षेत्र में भेज दिये गये। शेष लोग स्वेच्छा से 16 घण्टे काम करने लगे। युद्ध की समाप्ति तक लन्दन में उस कार्यालय के कर्मचारीगणों का यह काम अबाधित रूप से चलता रहा। जहाँ का सामान्य कर्मचारी देशहित के लिये इतना तत्पर हो। उसकी स्वाधीनता का अपहरण कौन कर सकता है।